IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

भागवत पुराण काल में भारतीय समाज और धर्म का ऐतिहासिक अवलोकन

प्रसून गंगावत
शोधार्थी
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डॉ0 अनिल सिहाग
सहायक आचार्य
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध की भूमिका

वेदों में सामाजिक, नैतिक मूल्यों का जो वर्णन उपलब्ध होता है, उसी को हमने सामाजिक आदर्श माना। उनमें वर्णित आश्रम व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था संस्कार व्यवस्था को ही भारतीय संस्कृति का आधार माना जाता है। पुराण का व्याकरण की दृष्टि से अर्थ है कि जो पुरातन कथाओं का वर्णन करे उसे पुराण कहते हैं। लोगों का यह कथन है कि वेदों के समय में भी पुराणों का अस्तित्व था और बाद में भी उसका अस्तित्व बना रहा, किन्तु इनकी रचना शैली. वेदों की रचना शैली से भिन्न है।

पुराणों के अनुसार यह सृष्टि सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग चार युगों में विभाजित है. तथा इन चार युगों के पश्चात प्रलय होता है और पुनः श्रृष्टि सृजित होती है। इन चारों युगों में परमात्मा लोक कल्याणार्थ जन्म लेता रहता है। पुराणों से अर्न्तदृष्टि मिलती है कि इस युग में जो भी है वह नाशवान है, आनन्द और वैभव भी स्थाई नहीं है। इसलिए आत्म सुख को ही सब कुछ मानना चाहिये।

पुराण मनुष्यों को उनके उत्तर दायित्व का बोध कराते हैं, वे यह सिखाते हैं कि संसार में सफलता के लिये अति विशिष्ट कर्तव्य करने चाहिये तथा जो व्यक्ति मानवता के मार्ग में रोड़े अटकाता है उससे संघर्ष करना चाहिये। पुराणों का कथन है कि कर्म के बीज मस्तिष्क में पैदा होते हैं, बाद में वह समस्त संसार में फैल जाते हैं पुराण पतित व्यक्ति के उत्थान का सन्देश देता है उनका यह मानना है कि जो कर्म शरीर के माध्यम से किये जाते हैं, उनमे नैतिकता और पवित्रता होनी चाहिये।

श्री मद्भागवत महापुराण में सर्वाधिक उत्कृष्ट वर्णन प्रेममार्ग का मिलता है, इसमें श्रीकृष्ण और गोपिकाओं की प्रेमकथा को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया

गया है। मानवीय सौन्दर्य के साथ प्राकृतिक सौन्दर्य को भी जोड़ा गया है तथा बाँसुरी वादन के माध्यम से हृदय की भावनाओं की अभिव्यक्ति की गयी है। भागवत में जो प्रेमकथा है, वह ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित है तथा कृष्ण को ईश्वर और गोपिकाओं को आत्मा स्वरूप माना गया है, इस प्रेम गाथा में आत्मा का परमात्मा से मिलन दिखाया गया है, इसमें वर्णित प्रेम पथभ्रष्ट करने वाला नहीं है।

पुराणों मे प्रेम के साथ भक्तिमार्ग को भी दर्शाया गया है, भक्ति मार्ग को ज्ञानमार्ग से श्रेष्ठ बतलाने की चेष्टा भागवत में की गयी है। भक्ति मार्ग को फलदायी बताया गया है, स्वतः परमात्मा कृष्ण कहते हैं अपने–अपने कर्म करो परन्तु मेरे प्रति निष्ठा की भावना के साथ यदि तुम सत्य पवित्रता एवं साहचर्य के साथ जीवन व्यतीत करोगे तो तुम भक्ति के माध्यम से मेरे पास पहुँच जाओगे। इसमें यह भी बतलाया गया है कि किसी भी व्यक्ति को बहुत अधिक घमण्ड नहीं करना चाहिये गर्व सर्वनाश का कारण है।

भागवत कहती है प्राकृतिक वस्तुओं से शिक्षा ग्रहण करो, अपने दुर्भाग्य के दिनों में भी पृथ्वी के समान दृढ़ रहो, पर्वत यह सन्देश देते है। कि सदैव दूसरों का कल्याण करो, वायु तुम्हे यह शिक्षा देती है कि तुम गतिशील बनो और सर्वत्र व्याप्त हो जाओ, जल तुम्हे पवित्र पावन रहने की शिक्षा देता है। अग्नि तुम्हें शिक्षा देती है कि ज्ञान की ज्योति सदैव तुम्हारे अन्दर प्रज्जवलित रहे।

पुराणों के माध्यम से भारतीय संस्कृति उजागर होती है, कोई भी विद्धान पुराणों की आलोचना पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर कितना ही करे, किन्तु पुराणों से अच्छे ग्रन्थ कोई और नहीं हो सकते इनमें रचनाकार ने यशस्वी आदर्श चरित्र का वर्णन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

पुराण मनुष्यों को उनके उत्तर दायित्व का बोध कराते हैं, वे यह सिखाते हैं कि संसार में सफलता के लिये अति विशिष्ट कर्तव्य करने चाहिये तथा जो व्यक्ति मानवता के मार्ग में रोडे अटकाता है उससे संघर्ष करना चाहिये। पुराणों का कथन है कि कर्म। के बीच मस्तिष्क में पैदा होते हैं, बाद में वह समस्त संसार में फैल

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

जाते हैं। पुराण पतित व्यक्ति के उत्थान का सन्देश देता है उनका यह मानना है कि जो कर्म शरीर के माध्यम से किये जाते हैं, उनमे नैतिकता और पवित्रता होनी चाहिये। पुराणों में वैराग्य के स्थान पर गृहस्थ आश्रम पर बल दिया गया है, पुराणों में कर्मवाद के साथ–साथ भाग्यवाद को भी स्वीकार किया गया है।

प्रस्तावित शोध का महत्व

समस्त पुराणों में उच्च स्तर की दार्शनिक एवं नैतिक सामग्री है। इन पुराणों में संस्कारों को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। इनमें व्यक्तियों को अनीति से दूर रहने की सलाह दी गई है पुराणों के माध्यम से कथाओं का सहारा लेते हुये यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि विश्व के विकास में संघर्ष करते हुये लक्ष्य की ओर बढा जा सकता है।

पुराणों में स्वर्ग और नरक का वर्णन भी उपलब्ध होता है, पाप और अपराध करने वाला व्यक्ति नरक गामी होता है और अच्छा कर्म करने वाला व्यक्ति स्वर्ग को प्राप्त करता है। पुराणों में तदयुगीन विज्ञान का वर्णन भी अति विस्तार से किया गया है, इसमें शून्य से लेकर बड़ी संख्या तक के अंक तथा गणित के सिद्धान्त वर्णित है। इसमें आयुर्वेद युद्ध पद्धिति तथा विविध वस्तुओं के र्निमाण सम्बन्धी विज्ञान का वर्णन है। इन पुराणों मे शास्त्र, इतिहास और प्रचलित संस्कृति का समन्वय है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. पुराणों में ईश्वर की भावना को सर्वाधिक महत्व दिया गया है।
2. पुराणों में ब्रह्मा को विश्व सृष्टा तथा विष्णु को विश्व रक्षक व शिव को महान संहारक माना गया है।
3. पुराणों में उच्चस्तर की दार्शनिक एवं नैतिक सामग्री व्यवस्थित है जो व्यक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है।
4. पुराणों के माध्यम से कथाओं का सहारा लेते हुए विश्व के विकास में संघर्ष करते हुए मनुष्य लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

समस्त पुराणों में भागवत पुराण को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस महाग्रन्थ में आदि, मध्य, और अन्त में वैराग्य उत्पन्न करने वाली कथायें है। इस महाग्रन्थ में भगवान कृष्ण से सम्बन्धित अनेक लीलाओं की कथा है। समस्त पुराणों का पठन पाठन करने के पश्चात यदि भागवत पुराण का पठन पाठन नहीं किया जाता तो समस्त पुराणों के पाठ का कोई फल नहीं मिलता, जैसे नदियों में गंगा, देवताओं में विष्णु, वैष्णवों में शंकर, वैसे ही पुराणों में भागवत् है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अमर कोश 1978 : अमरसिंह, संपादित हरगोविन्द शास्त्री, हरिदास संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
2. अष्ठादश पुराण दर्पण :ज्वालाप्रसाद मिश्र, वेकंटेश्वर प्रेस, बम्बई।
3 अष्ठाध्यायी 1962 : पाणिनि, संपादित एस.सी. बसु दिल्ली।
4. अहिर्बुध्न्य संहिता 1916 : संपादित एम.डी.रामानुजाचार्य, अड्सार, मद्रास।
5. आपस्तम्ब गृह्यसूत्र 1932 : संपादित जी.ब्यूहलर, बाम्बे संस्कृत सीरीज, पूना।
6. आपरतम्ब धर्मसूत्र 1932 : संपादित जी.ब्यूहलर, बाम्बे संस्कृत सीरीज पूना।
: हिन्दी व्याख्याकार–डा0 उमेशचन्द्र पाण्डेय, वाराणसी 1969।